ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 239-241

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

विकलांग विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में होने वाली समस्याओं का समीक्षात्मक अध्ययन

वीरेन्द्र कुमार पाण्डेय

शोध अध्येता, शिक्षा संकाय, जगद्गुरू रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट (उ0प्र0) भारत

Received- 04.12. 2019, Revised- 08.12.2019, Accepted - 11.12.2019 E-mail: shakil1782@gmail.com

सारांश : *भारतीय समाज में विकलांग बच्चे सदैव उपेक्षित रहे हैं। माता–पिता एवं अभिभावक मानते हैं कि विकलांग बच्चे शिक्षा के लिए उपयुक्त नहीं हैं जिसके कारण इन बच्चों में शिक्षा का अभाव देखा गया है। परन्तु वर्तमान समाज में इस अवधारणा में परिवर्तन देखा गया है जिसके कारण विकलांग बच्चों को शिक्षा के माध्यम से समाज की मुख्य धारा में जोड़ने का कार्य किया जा रहा है। विकलांग बच्चों की उच्च शिक्षा ग्रहण करने में समस्या उत्पन्न होती हैं। ये समस्याएँ शैक्षणिक व्यक्तिगत, चालन तथा सामाजिक समस्याओं से सम्बन्धित है। ये समस्याएँ अल्पदृष्टिवान विद्यार्थी जिनको बड़े मोटे लिखे हुए अक्षर पढ़ने एवं लिखने में कठिनाई होती है। दूसरे वे बच्चे जो पूर्ण दृष्टिहीन होते है वे पूर्णरूप से असमर्थ होते है। तीसरे प्रकार के वे विकलांग है जो 50 प्रतिशत के नीचे अपंग होते हैं। चौथे श्रेणी में वे विकलांग है जो हाथ पैर दोनो से अपंग होते है। जिनको हम पूर्ण अस्थि विकलांग कहते है। इस प्रकार के विकलांग उच्च शिक्षा ग्रहण करने में समस्या महसूस करते है। तथा इस प्रकार के विकलांगों के लिये विशेष विद्यालय में विशेष शिक्षा की व्यवस्था की गयी है।*

कुंजी शब्द– भारतीय समाज, विकलांग, उपेक्षित, अभिभावक, अवधारणा, शैक्षणिक, व्यक्तिगत, चालन, अल्पदृष्टिवान

वर्तमान अध्ययन के पक्ष में तर्क– अस्थिविकलांग तथा दृष्टिबाधित को अपनी विकलांगता के बावजूद जीवन में अपने शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक विकास के सम्भाविक उच्चतम विन्दु तक पहुचने तथा स्थिति को बनाये रखने के लिए सामान्य से भिन्न परन्तु उनके लिए उपयुक्त शिक्षण प्रशिक्षण तकनीकों का प्रयोग किया जाता है इसके लिए शैक्षिक सुविधाओं की उपलब्धता की स्थिति आवश्यक होती है इस विषय के अध्ययन की आवश्यकता है कि वर्तमान स्थिति में अस्थिविकलांग तथा दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध शैक्षिक सेवाओं की क्या स्थिति है सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन करने से पता चला है कि भारत में इस प्रकार के अध्ययन की बहुत ही कमी है। अतः वर्तमान अध्ययन की अत्यन्त आवश्यकता है अस्थिविकलांग तथा दृष्टिबाधित बच्चों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में आने वाली समस्याओं का ज्ञान करने के लिए शोधार्थी को इस दिशा में कार्य करने की प्रेरणा मिली। समस्या कथन ''विकलांग विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में होने वाली समस्याओं का समीक्षात्मक अध्ययन''।

अध्ययन के उद्देश्य –

1. विकलांग विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में होने वाली शैक्षणिक समस्याओं का अध्ययन करना।
2. विकलांग विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में होने वाली छात्रावास सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना।
3. विकलांग विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में होने वाली व्यक्तिगत समस्याओं का अध्ययन करना।
4. विकलांग विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में चलन क्रिया से होने वाली समस्याओं का अध्ययन करना।
5. विकलांग विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में होने वाली सामाजिक समस्याओं का अध्ययन करना।
6. विकलांग विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में होने वाली प्रशासनिक समस्याओं का अध्ययन करना।
7. विकलांग विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में होने वाली समायोजन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना –

1. उच्च शिक्षा में अस्थि विकलांग तथा दृष्टिबाधित विकलांगों को विषय चयन की समस्याओं में सार्थक अन्तर है।
2. उच्च शिक्षा में अस्थि विकलांग तथा दृष्टिबाधित विकलांगों को छात्रावास की समस्याओं में सार्थक अन्तर है।
3. विकलांग विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में व्यक्तिगत समस्याओं में सार्थक अन्तर है।
4. विकलांग विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में चलन सम्बन्धी समस्याओं में सार्थक अन्तर है।
5. विकलांग विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में सामाजिक समस्याओं में सार्थक अन्तर है।
6. विकलांग विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में प्रशासनिक समस्याओं में सार्थक अन्तर है।
7. विकलांग विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में समायोजन सम्बन्धी समस्याओं में सार्थक अन्तर है।

विधियाँ और प्रक्रियाएं – आँकड़ों का स्रोत अस्थिविकलांग जिनकी विकलांगता 50 प्रतिशत से लेकर

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

100 प्रतिशत तक हो तथा दृष्टिबाधित 50 प्रतिशत से लेकर 100 प्रतिशत विद्यार्थियों को अध्ययन हेतु सीमित है।

व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित प्रश्नावली का प्रयोग उपकरण के रूप में किया गया है। आँकड़ों को प्रतिशत के द्वारा एवं (2) के द्वारा विष्लेशण और आख्या वर्णनात्मक ढंग से की गयी है।

प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या – इस शोध का उद्देश्य उच्च शिक्षा में अस्थि विकलांग तथा दृष्टिबाधित विकलांग को आने वाली समस्याओं को जानना था। शोधकर्ता ने पूर्व में निर्धारित किये गये उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के अनुसार परीक्षणों में प्राप्त आंकड़ों का क्रमवार विश्लेषण किया है, जो इस प्रकार है–

सारणी संख्या–1 कुल विद्यार्थियों की संख्या

कक्षा	अस्थि विकलांग	दृष्टिबाधित	कुल योग
बी0ए0	40	35	75
एम0ए0	15	25	40
बी0एड0	35	25	60
एम0एड0	10	15	25
कुल योग	100	100	200

शैक्षणिक समस्याओं से सम्बन्धित– परिकल्पना–1 (विषय चुनने की समस्या) उच्च शिक्षा में अस्थि विकलांग तथा दृष्टिबाधित विकलांगों को विषय चयन की समस्याओं में सार्थक अन्तर है।

शून्य परिकल्पना– उच्च शिक्षा में अस्थि विकलांग तथा दृष्टिबाधित विकलांगों को विषय चयन की समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

काई वर्ग की गणना–

सोपान	प्रतिक्रिया वर्ग		योग
	हाँ	नहीं	
fo	70	130	200
fe	100	100	200
Fo-fe	30	30	
$(fo-fe)^2$	900	900	
$\frac{(fo-fe)^2}{fe}$	900/100	900/100	$\chi^2=\sum\frac{(f_o-f_e)^2}{f_e}$ =18

व्याख्या–तालिका संख्या 4.2.1 का अध्ययन करने पर परिगणित ग2 का मान 18 है। कत्रि1 के .01 स्तर पर व .05 स्तर पर सार्थकता न्यूनतम आवश्यक सारणी मान 6. 635 व क्रमशः 3.841 से अधिक है। अतः X2 सार्थक है और शून्य परिकल्पन को निरस्त करते हुए कहा जा सकता है कि छात्रों द्वारा व्यक्ति प्रतिक्रियायें विभिन्न वर्गों में समान रूप से वितरित नहीं है।

प्रमुख निष्कर्ष– शारीरिक तौर से विकलांग विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा ग्रहण करने में निम्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जैसे– शैक्षणिक समस्यायें, सामाजिक समस्यायें, परिवारिक समस्यायें, आर्थिक समस्यायें एवं प्रशासनिक समस्यायें आदि। फिर भी स्पष्ट है कि छात्रों द्वारा व्यक्ति प्रक्रिया के आधार पर उनके विचारों को सम्यक् रूपेण सकारात्मक कह देने से शोध कर्ता को यह दिशा प्राप्त नहीं होती जो उसे अभिशिप्त है। अतः विकलांग विद्यार्थी को उच्च शिक्षा में होने वाली समस्याओं के प्रति विद्यार्थियों के विचारों को निम्नोक्त तथ्य आये जो कि निष्कर्षात्मक रूप में प्रस्तावित किये जा सकते हैं।

शैक्षणिक समस्याओं से सम्बन्धित

1. विकलांग विद्यार्थियों में 35 प्रतिशत अस्थि विकलांगों को विषय चयन में समस्या होती है जबकि दृष्टिबाधित छात्रों को 65 प्रतिशत छात्रों को विषय चयन में समस्या होती है। अतः हम कह सकते हैं कि अस्थि विकलांग विद्यार्थियों की अपेक्षा दृष्टिबाधित विकलांग छात्रों को विषय चयन में ज्यादा कठिनाई होती है।

– अल्पदृष्टिवान विकलांगों की शत–प्रतिशत विकलांगों को लिखने की समस्या हुई। क्योंकि कुछ अल्पदृष्टिवान विकलांग चश्में की सहायता से भी ठीक प्रकार से अक्षर नहीं पहचान पाते हैं पूर्ण दृष्टिवान का 40 प्रतिशत को लिखने में समस्या होती है। और पूर्ण दृष्टिहीन में ब्रेल की सहायता से लिखते हैं 40प्रतिशत अर्ध अस्थिविकलांग तथा पूर्ण अस्थिविकलांग को इस प्रकार लिखने की समस्या इस लिये होती है कि वे हाथों से अपंग पाये गये।

– 40 प्रतिशत अल्पदृष्टिवान को श्रुतिलेखन में समस्या हुई तथा 60 प्रतिशत अल्पदृष्टिवान को श्रुति लेखन की समस्या नहीं हुई। 20 प्रतिशत पूर्ण दृष्टिहीन को श्रुति लेखन की समस्या हुई जबकि 80 प्रतिशत पूर्ण दृष्टिहीन को श्रुतिलेखन की समस्या नहीं हुई। 50 प्रतिशत पूर्ण अस्थिविकलांगों को श्रुति लेखन की समस्या हुई जबकि 50 प्रतिशत पूर्ण अस्थिविकलांगों को समस्या नहीं हुई।

– परीक्षा में अतिरिक्त समय 40 प्रतिशत अल्पदृष्टिवान को अतिरिक्त समय न मिलने के कारण समस्या हुई। जबकि 20 प्रतिशत पूर्ण दृश्टिहीन को अतिरिक्त समय न मिलने से समस्या हुई। तथा अर्धअस्थि पूर्ण अस्थिविकलांग को सर्वाधिक समस्या हुई।

– 60 प्रतिशत अल्पदृष्टिवानों को तथा 40 प्रतिशत पूर्ण दृष्टिहीनों को अध्यापक शिक्षण गतिविधियों के समय ध्यान नहीं देते जबकि 10 प्रतिशत अर्धअस्थिविकलांग तथा 20 प्रतिशत पूर्ण अस्थिविकलांग ने स्वीकार किया कि शिक्षक कक्षा में उन पर विशेष ध्यान नहीं देते।

– कम्प्यूटर शिक्षा में क्रमशः सर्वाधिक समस्या

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

पूर्णदृष्टिहीन, अल्पदृष्टिहीन, पूर्ण अस्थिविकलांग तथा अर्धअस्थिविकलांग को समस्या हुई क्योंकि पूर्णदृष्टिहीन देखने में असमर्थ होते हैं तथा पूर्ण अस्थि विकलांग के पास हाथों का अभाव पाया जाता है।

– ब्रेल लिखने में अल्पदृष्टिवान को सर्वाधिक समस्य हुई।

– अल्पदृष्टिवान, पूर्ण दृष्टिहीन, अर्ध अस्थिविकलांग को ओ0एच0पी0 के द्वारा शिक्षा न मिलने पर समस्या हुई।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. एस0पी0 गुप्ता एवं अल्का गुप्ता (2002)– उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भण्डार, इलाहाबाद।
2. राय, पारसनाथ (2006)– अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, पब्लिकेशन, आगरा।
3. गुप्ता, एस0पी0 (2005)– सांख्यिकी विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
4. कपिल एच0के0 (2006)– अनुसंधान विधियाँ, एच0पी0 भार्गव, बुक हाउस, आगरा।
5. अरूण कुमार सिंह (2017)– मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ– मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

*****